व्हिडिओ पहा

8

DAY • JANUARY

"परछाई"

आज मेरी परछाई, मुझे देख मुस्कुराई,
मैं ने कहा, किस बात पें हंसी तुझे आई।
बोली वह आहा! बहुत दिनों बाद हो मिली,
थी तो तुम मेरे पास ही, पर कुछ ना बोली।
शरीर और मन लेकर चलना आसान है,
किंतु समन्वय दोनों का साधकर चलना कठीन है।
मैं भी रुक सी गयी और देखा उसे, अरे!
मेरी ही परछाई में, पड़ गयी कितनी दरारे।
खुश थी मैं जब, तब मुझे वह याद नहीं आयी।
छोड़ गये सब मुझे, पर वो कही नही गयी।
मेरे ही अस्तित्व का, तब मुझे हुआ विश्वास,
वह गिद्ध के श्वापदो का, सारा भय हुआ खलास।
जन्म के साथ ही, जन्मी मेरी परछाई,
मृत्यु को भी वहीं मैं भरकर, साथ चलेगी परछाई।

संध्या भालेराव. बावधन, पुणे.
9820130982